शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष: 8, अंक : 20 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, सोमवार
12 जून, 2023
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

ऊसर भूमियों पर फसल उगा कर बढ़ायें आमदनीः डॉ खलील खान

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमि सुधार के कार्यों को प्रारंभ करने का सबसे उत्तम समय गर्मियों के महीनों में होता है। उन्होंने बताया कि पूरे देश में लगभग 71 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित है जबकि उत्तर प्रदेश में लगभग 13 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल ऊसर से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त जनपद कानपुर देहात में लगभग 15 हजार हेक्टेयर एवँ कानपुर नगर मेंलगभग 12 हजार हेक्टेयर ऊसर प्रभावित एवं अकृषि क्षेत्रफल है।उन्होंने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम फैलाने के तुरंत बाद कल्टीवेटर या देशी हल से भूमि के ऊपरी 7-8 सेंटीमीटर की सतह में जिप्सम को मिलाकर खेत में समतल करके मेड़बंदी करना जरूरी होता है। ताकि खेत में सब जगह पानी बराबर पहुंच सके। डॉ खलील खान ने बताया कि जिप्सम को मृदा में अधिक गहराई तक नहीं मिलाना चाहिए। धान की फसल में जिप्सम की आवश्यक मात्रा (50 से 60 कुंतल प्रति एकड़) को फसल लगाने से 10 से 15 दिन पहले खेत में डालना चाहिए। पहले चार से पांच सेंटीमीटर हल्का पानी लगाना चाहिए।जब पानी थोड़ा सूख जाए तो पुनः 12 से 15 सेंटीमीटर पानी भरकर रिसाव क्रिया संपन्न करनी चाहिए। डॉक्टर खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम को बार-बार मिलाने की आवश्यकता नहीं होती है ।उन्होंने बताया कि शोधो द्वारा पाया गया है कि धान को ऊसर भूमियों में लगातार उगाते रहे तो मृदा के ऊसरपन में कमी आती है ।उन्होंने किसानों से अपील की है कि कभी भी खेतों को लंबी अवधि तक खाली नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने बताया कि ऊसर मृदा में उपस्थित सोडियम की अधिक मात्रा से मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है जिसके कारण पानी व हवा का रिसाव कम होता है तथा मिट्टी की भौतिक दशा बिगड़ जाती है ।इन भूमियों में नाइट्रोजन, कैल्शियम तथा जिंक की भारी कमी हो जाती है। जिससे फसल उत्पादन लाभदायक नहीं हो पाता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसलों के पोषक तत्वों की मांग केवल जिप्सम डालकर पूरा करना असंभव है। क्योंकि इसमें केवल कैल्शियम, गंधक प्राप्त किए जा सकते हैं। इसलिए रासायनिक उर्वरकों एवं हरी खाद के साथ जिप्सम का प्रयोग करके भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए धान की ऊंसर सहनशील प्रजातियों को ही उगाना चाहिए। डॉक्टर खान ने सहनशील ऊसर धान की प्रजातियों के बारे में बताया कि सीएसआर 13, सीएसआर 27, सीएसआर 36 एवं सीएसआर 46 उपयुक्त ऊसर धान की प्रमुख प्रजातियां हैं।

ऊसर भूमि पर फसल उगाकर किसान बढ़ाएं अपनी आमदनी : डॉ खलील

यूपी मैसेंजर संवाददाता

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमि सुधार के कार्यों को प्रारंभ करने का सबसे उत्तम समय गर्मियों के महीनों में होता है।

उन्होंने बताया कि पूरे देश में लगभग 71 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित है जबकि उत्तर प्रदेश में लगभग 13 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल ऊसर से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त जनपद कानपुर देहात में लगभग 15 हजार हेक्टेयर एवँ कानपुर नगर मेंलगभग 12 हजार हेक्टेयर ऊसर प्रभावित एवं अकृषि क्षेत्रफल है।उन्होंने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम फैलाने के तुरंत बाद कल्टीवेटर या देशी हल से भूमि के ऊपरी 7-8 सेंटीमीटर की सतह में

जिप्सम को मिलाकर खेत में समतल करके मेड़बंदी करना जरूरी होता है। ताकि खेत में सब जगह पानी बराबर पहुंच सके। डॉ खलील खान ने बताया कि जिप्सम को मृदा में अधिक गहराई तक नहीं मिलाना चाहिए। धान की फसल में जिप्सम की आवश्यक मात्रा (50 से 60 कुंतल प्रति एकड़) को फसल लगाने से 10 से 15 दिन पहले खेत में डालना चाहिए।

पहले चार से पांच सेंटीमीटर हल्का पानी लगाना चाहिए।जब पानी थोड़ा सूख जाए तो पुन: 12 से 15 सेंटीमीटर पानी भरकर रिसाव क्रिया संपन्न करनी चाहिए। डॉक्टर खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम को बार-बार मिलाने की आवश्यकता नहीं होती है। उन्होंने बताया कि शोधो द्वारा पाया गया है कि धान को ऊसर भूमियों में लगातार उगाते रहे तो मृदा के ऊसरपन में कमी आती है ।उन्होंने किसानों से अपील की है कि कभी भी खेतों को लंबी अवधि तक खाली नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने बताया कि ऊसर मृदा में उपस्थित सोडियम की अधिक मात्रा से मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है जिसके कारण पानी व हवा का रिसाव कम होता है तथा मिट्टी की भौतिक दशा बिगड़ जाती है ।इन भूमियों में नाइट्रोजन, कैल्शियम तथा जिंक की भारी कमी हो जाती है। जिससे फसल उत्पादन लाभदायक नहीं हो पाता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसलों के पोषक तत्वों की मांग केवल जिप्सम डालकर पूरा करना असंभव है।

ऊसर भूमियों पर फसल उगा कर बढ़ायें आमदनी

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमि सुधार के कार्यों को प्रारंभ करने का सबसे उत्तम समय गर्मियों के महीनों में होता है। उन्होंने बताया कि पूरे देश में लगभग 71 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित है जबकि उत्तर प्रदेश में लगभग 13 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल ऊसर से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त जनपद कानपुर देहात में लगभग 15 हजार हेक्टेयर एवँ कानपुर नगर मेंलगभग 12 हजार हेक्टेयर ऊसर प्रभावित एवं अकृषि क्षेत्रफल है।उन्होंने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम फैलाने के तुरंत बाद कल्टीवेटर या देशी हल से भूमि के ऊपरी 7-8 सेंटीमीटर की सतह में जिप्सम को मिलाकर खेत में समतल करके मेड़बंदी करना जरूरी होता है। ताकि खेत में सब जगह पानी बराबर पहुंच सके। डॉ खलील खान ने बताया कि जिप्सम को मृदा में अधिक गहराई तक नहीं मिलाना चाहिए।

धान की फसल में जिप्सम की आवश्यक मात्रा (50 से 60 कुंतल प्रति एकड़) को फसल लगाने से 10 से 15 दिन पहले खेत में डालना चाहिए। पहले चार से पांच सेंटीमीटर हल्का पानी लगाना चाहिए।जब पानी थोड़ा सूख जाए तो पुनः 12 से 15 सेंटीमीटर पानी भरकर रिसाव क्रिया संपन्न करनी चाहिए। डॉक्टर खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम को बार-बार मिलाने की आवश्यकता नहीं होती है ।उन्होंने बताया कि शोधो द्वारा पाया गया है कि धान को ऊसर भूमियों में लगातार उगाते रहे तो मृदा के ऊसरपन में कमी आती है ।उन्होंने किसानों से अपील की है कि कभी भी खेतों को लंबी अवधि तक खाली नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने बताया कि ऊसर मृदा में उपस्थित सोडियम की अधिक मात्रा से मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है जिसके कारण पानी व हवा का रिसाव कम होता है तथा मिट्टी की भौतिक दशा बिगड़ जाती है ।इन भूमियों में नाइट्रोजन, कैल्शियम तथा जिंक की भारी कमी हो जाती है। जिससे फसल उत्पादन लाभदायक नहीं हो पाता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसलों के पोषक तत्वों की मांग केवल जिप्सम डालकर पूरा करना असंभव है। क्योंकि इसमें केवल कैल्शियम, गंधक प्राप्त किए जा सकते हैं। इसलिए रासायनिक उर्वरकों एवं हरी खाद के साथ जिप्सम का प्रयोग करके भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए धान की ऊंसर सहनशील प्रजातियों को ही उगाना चाहिए। डॉक्टर खान ने सहनशील ऊसर धान की प्रजातियों के बारे में बताया कि सीएसआर 13, सीएसआर 27, सीएसआर 36 एवं सीएसआर 46 उपयुक्त ऊसर धान की प्रमुख प्रजातियां हैं।

आज 12/06/2023 महा

ऊसर भूमि पर फसल उगाकर आमदनी बढ़ायें किसान

❑ देश में 71 लाख और यूपी में 13 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित

ऊसर भूमि का नजारा।

कानपुर, 11 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमि सुधार के कार्यों को प्रारंभ करने का सबसे उत्तम समय गर्मियों के महीनों में होता है। उन्होंने बताया कि पूरे देश में लगभग 71 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित है जबकि उत्तर प्रदेश में लगभग 13 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल ऊसर से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त जनपद कानपुर देहात में लगभग 15 हजार हेक्टेयर एवं कानपुर नगर मेंलगभग 12 हजार हेक्टेयर ऊसर प्रभावित एवं अकृषि क्षेत्रफल है।उन्होंने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम फैलाने के तुरंत बाद कल्टीवेटर या देशी हल से भूमि के ऊपरी 7-8 सेंटीमीटर की सतह में जिप्सम को मिलाकर खेत में समतल करके मेड़बंदी करना जरूरी होता है। ताकि खेत में सब जगह पानी बराबर पहुंच सके। डॉ खलील खान ने बताया कि जिप्सम को मृदा में अधिक

डॉ. खलील खान

गहराई तक नहीं मिलाना चाहिए। धान की फसल में जिप्सम की आवश्यक मात्रा (50 से 60 कुंतल प्रति एकड़) को फसल लगाने से 10 से 15 दिन पहले खेत में डालना चाहिए। पहले चार से पांच सेंटीमीटर हल्का पानी लगाना चाहिए।जब पानी थोड़ा सूख जाए तो पुनः 12 से 15 सेंटीमीटर पानी भरकर रिसाव क्रिया संपन्न करनी चाहिए। डॉ. खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम को बार-बार मिलाने की आवश्यकता नहीं होती है ।उन्होंने बताया कि शोधो द्वारा पाया गया है कि धान को ऊसर भूमियों में लगातार उगाते रहे तो मृदा के ऊसरपन में कमी आती है ।उन्होंने किसानों से अपील की है कि कभी भी खेतों को लंबी अवधि तक खाली नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने बताया कि ऊसर मृदा में उपस्थित सोडियम की अधिक मात्रा से मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है जिसके कारण पानी व हवा का रिसाव कम होता है तथा मिट्टी की भौतिक दशा बिगड़ जाती है। इन भूमियों में नाइट्रोजन, कैल्शियम तथा जिंक की भारी कमी हो जाती है। जिससे फसल उत्पादन लाभदायक नहीं हो पाता है। डॉ. खान ने बताया कि फसलों के पोषक तत्वों की मांग केवल जिप्सम डालकर पूरा करना असंभव है। क्योंकि इसमें केवल कैल्शियम, गंधक प्राप्त किए जा सकते हैं। इसलिए रासायनिक उर्वरकों एवं हरी खाद के साथ जिप्सम का प्रयोग करके भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए धान की ऊंसर सहनशील प्रजातियों को ही उगाना चाहिए। डॉ खान ने सहनशील ऊसर धान की प्रजातियों के बारे में बताया कि सीएसआर 13, सीएसआर 27, सीएसआर 36 एवं सीएसआर 46 उपयुक्त ऊसर धान की प्रमुख प्रजातियां हैं।

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

रविवार 11 मई, 2023 | अंक - 404 | www.worldkhabarexpress.media www.worldkhabarexpress.com | MID DAY E-PAPER | इतिहास रचने से 280 रन पीछे भारत

ऊसर भूमियों पर फसल उगा कर बढ़ायें आमदनी : डॉ खलील खान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमि सुधार के कार्यों को प्रारंभ करने का सबसे उत्तम समय गर्मियों के महीनों में होता है। उन्होंने बताया कि पूरे देश में लगभग 71 लाख हेक्टेयर भूमि ऊसर से प्रभावित है जबकि उत्तर प्रदेश में लगभग 13 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल ऊसर से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त जनपद कानपुर देहात में लगभग 15 हजार हेक्टेयर एवं कानपुर नगर में लगभग 12 हजार हेक्टेयर ऊसर प्रभावित एवं अकृषि क्षेत्रफल है। उन्होंने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम फैलाने के तुरंत बाद कल्टीवेटर या देशी हल से भूमि के ऊपरी 7-8 सेंटीमीटर की सतह में जिप्सम को मिलाकर खेत में समतल करके मेड़बंदी करना जरूरी होता है। ताकि खेत में सब जगह पानी बराबर पहुंच सके। डॉ खलील खान ने बताया कि जिप्सम को मृदा में अधिक गहराई तक नहीं मिलाना चाहिए। धान की फसल में जिप्सम की आवश्यक मात्रा (50 से 60 कुंतल प्रति एकड़) को फसल लगाने से 10 से 15 दिन पहले खेत में डालना चाहिए। पहले चार से पांच सेंटीमीटर हल्का पानी लगाना चाहिए। जब पानी थोड़ा सूख जाए तो पुनः 12 से 15 सेंटीमीटर पानी भरकर रिसाव क्रिया संपन्न करनी चाहिए।

डॉक्टर खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में जिप्सम को बार-बार मिलाने की आवश्यकता नहीं होती है । उन्होंने बताया कि शोधों द्वारा पाया गया है कि धान को ऊसर भूमियों में लगातार उगाते रहे तो मृदा के ऊसरपन में कमी आती है। उन्होंने किसानों से अपील की है कि कभी भी खेतों को लंबी अवधि तक खाली नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने बताया कि ऊसर मृदा में उपस्थित सोडियम की अधिक मात्रा से मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है जिसके कारण पानी व हवा का रिसाव कम होता है तथा मिट्टी की भौतिक दशा बिगड़ जाती है। इन भूमियों में नाइट्रोजन, कैल्शियम तथा जिंक की भारी कमी हो जाती है। जिससे फसल उत्पादन लाभदायक नहीं हो पाता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसलों के पोषक तत्वों की मांग केवल जिप्सम डालकर पूरा करना असंभव है। क्योंकि इसमें केवल कैल्शियम, गंधक प्राप्त किए जा सकते हैं। इसलिए रासायनिक उर्वरकों एवं हरी खाद के साथ जिप्सम का प्रयोग करके भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए धान की ऊंसर सहनशील प्रजातियों को ही उगाना चाहिए। डॉक्टर खान ने सहनशील ऊसर धान की प्रजातियों के बारे में बताया कि सीएसआर 13, सीएसआर 27, सीएसआर 36 एवं सीएसआर 46 उपयुक्त ऊसर धान की प्रमुख प्रजातियां हैं।